

श्रीमद्भागवत नवम स्कन्ध अध्याय 15: परशुराम

27 September 2026

🙏 पाठ से पहले एक निवेदन

श्रीमद्भागवत महापुराण के ये अध्यायवार सार गीता प्रेस भागवत को मुख्य आधार मानकर तैयार किए गए हैं। ये भागवत के अध्ययन में सहायक हैं, मूल ग्रंथ का स्थान नहीं ले सकते।

अध्ययन का मुख्य और अनुशंसित मार्ग गीता प्रेस की भागवत पुस्तक से सीधा पाठ है। यात्रा में, घर से दूर, या जब पुस्तक पास न हो, तब निरंतर अध्ययन, पुनरावृत्ति और समझ के लिए इन सारों का सहारा लिया जा सकता है।



अपना भयंकर परशु उठाए, भगवान् परशुराम, भगवान् के योद्धा अवतार, सहस्रबाहु राजा कार्तवीर्य अर्जुन का सामना करते हैं — एक अभिमानी एवं अधर्मी राजा के अत्याचार को समाप्त करने के लिए उठती धर्ममयी शक्ति।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवत विज्ञप्ति में आपका स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं एवं शिक्षाओं की एक श्रद्धापूर्ण यात्रा। नवम स्कन्ध का यह पन्द्रहवाँ अध्याय भगवान् परशुराम के अवतार को कहता है, जो ऋषि भृगु के वंश में उत्पन्न भगवान् विष्णु के आंशिक अवतार हैं। शुकदेव राजा परीक्षित को ऋषि ऋचीक एवं सत्यवती की कथा, पवित्र चरुओं के उस विचित्र आदान-प्रदान का, जिसने उनके वंशजों की नियति को

आकार दिया, और जमदग्नि एवं उनके पुत्र राम — परशुराम — के जन्म का वर्णन करते हैं। तत्पश्चात् अध्याय हैहय-राज कार्तवीर्य अर्जुन की ओर मुड़ता है, जिन्होंने भगवान् दत्तात्रेय की आराधना करके सहस्र भुजाएँ एवं विशाल शक्ति पाई, किन्तु इतने अभिमानी हो गए कि जमदग्नि के आश्रम से पवित्र कामधेनु को चुरा लिया। इस अपराध ने उन पर परशुराम का क्रोध ला दिया, जिन्होंने उस अत्याचारी एवं उसकी सेना का पीछा करके संहार किया। यह अध्याय अभिमान एवं शक्ति के संकट, ब्राह्मणों की पवित्रता, क्षमा की उच्चतर महिमा, और पृथ्वी का भार हरने के लिए भगवान् के योद्धा रूप में अवतरण के विषय में है।

अध्याय-परिचय

- ग्रन्थ: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 9 (नवम स्कन्ध)
- अध्याय: 15 (पञ्चदश अध्याय)
- अध्याय शीर्षक: परशुराम, भगवान् के योद्धा अवतार
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी, राजा परीक्षित को कथा सुनाते हुए — सम्पूर्ण कथा सूत गोस्वामी द्वारा नैमिषारण्य में शौनक ऋषि एवं ऋषि-समुदाय को सुनाई गई
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: ऋषि भृगु का वंश; ऋषि जमदग्नि का आश्रम; माहिष्मती में हैहयों का राज्य
- केन्द्रीय विषय: परशुराम का जन्म, राजा कार्तवीर्य अर्जुन का अभिमान एवं अपराध, पवित्र गौ का हरण, और परशुराम द्वारा उसकी पुनर्प्राप्ति
- मुख्य श्लोक-परास: नवम स्कन्ध, अध्याय 15, श्लोक 1-41
- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण

पुरूरवा से गाधि तक

शुकदेव ने चन्द्रवंश आगे बढ़ाया। पुरूरवा के उर्वशी से छह पुत्र हुए, जिनमें आयु प्रमुख थे, और उस वंश से अनेक राजा हुए — जिनमें जहु भी थे, जिन्होंने कभी सम्पूर्ण गंगा को अपनी अंजुली में लेकर पी लिया था। समय पाकर कुश हुए, और उनके पुत्र कुशाम्ब से गाधि हुए, जिनकी पुत्री सद्गुणी सत्यवती थीं।

ऋचीक और सत्यवती का विवाह

भृगुवंशी ब्राह्मण ऋषि ऋचीक ने गाधि से सत्यवती का हाथ माँगा। ऋषि को एक असमान वर मानकर, गाधि ने एक कठोर मूल्य रखा: एक हज़ार घोड़े, चन्द्रमा-से श्वेत, प्रत्येक का एक कान काला।

तस्य सत्यवतीं कन्यामृचीकोऽयाचत द्विजः ।
वरं विसदृशं मत्वा गाधिर्भागवमब्रवीत् ॥ ५ ॥
एकतः श्यामकर्णानां हयानां चन्द्रवर्चसाम् ।
सहस्रं दीयतां शुल्कं कन्यायाः कुशिका वयम् ॥ ६ ॥

*tasya satyavatīm kanyām ṛcīko 'yācata dvijaḥ varam visadṛśaṁ matvā gādhir bhārgavam
abravīt ekataḥ śyāma-karṇānām hayānām candra-varcasām sahasraṁ dīyatām śulkaṁ
kanyāyāḥ kuśikā vayam*

अर्थ: ब्राह्मण ऋचीक ने सत्यवती का हाथ माँगा; उन्हें असमान वर मानकर गाधि ने कहा: “वधू-मूल्य रूप में एक हज़ार घोड़े दो, चन्द्रमा-से श्वेत, प्रत्येक का एक कान काला, क्योंकि हम कुशिक के श्रेष्ठ वंश के हैं।” (नवम स्कन्ध, अध्याय 15, श्लोक 5-6)

उनका अभिप्राय समझकर, ऋचीक ने वरुण से घोड़े प्राप्त किए, उन्हें दिया, और उस सुन्दर राजकुमारी से विवाह किया।



सत्यवती का हाथ पाने के लिए, ऋषि ऋचीक वरुण से एक हज़ार चन्द्रमा-से श्वेत घोड़े प्राप्त करते हैं, प्रत्येक का एक कान काला, और उन्हें राजा गाधि को वधू-मूल्य रूप में प्रस्तुत करते हैं (श्लोक 5-7)।

दो चरु और परशुराम का जन्म

अपनी पत्नी एवं अपनी सास दोनों की, जो पुत्र चाहती थीं, प्रार्थना पर, ऋचीक ने दो पवित्र चरु तैयार किए, एक महान् ब्राह्मण उत्पन्न करने की शक्ति से युक्त और दूसरा महान् क्षत्रिय की, और स्नान करने चले गए। किन्तु दोनों स्त्रियों ने, प्रत्येक दूसरे का भाग श्रेष्ठ मानकर, उन्हें बदल लिया। यह जानकर, ऋषि ने अपनी पत्नी से कहा कि उसने एक गम्भीर भूल की है: अब उसका पुत्र एक भयंकर योद्धा होगा, और उसका भाई एक महान् ब्रह्मज्ञानी।

तद् विदित्वा मुनिः प्राह पत्नीं कष्टमकारषीः ।
घोरो दण्डधरः पुत्रो भ्राता ते ब्रह्मवित्तमः ॥ १० ॥

tad viditvā muniḥ prāha patnīm kaṣṭam akāraṣīḥ ghorō daṇḍa-dharaḥ putro bhrātā te brahma-vittamaḥ

अर्थ: जो हुआ उसे जानकर, ऋषि ने अपनी पत्नी से कहा: “तुमने एक गम्भीर भूल की है। अब तुम्हारा पुत्र एक भयंकर दण्डधर होगा, और तुम्हारा भाई एक परम ब्रह्मज्ञानी।” (नवम स्कन्ध, अध्याय 15, श्लोक 10)

सत्यवती की प्रार्थना पर, ऋषि ने ऐसा किया कि वह योद्धा-स्वभाव उसके पौत्र में चला जाए; और इस प्रकार उसे जमदग्नि उत्पन्न हुए। सत्यवती स्वयं पवित्र, लोक-पावनी कौशिकी (कोसी) नदी बन गई। जमदग्नि के, अपनी पत्नी रेणुका के द्वारा, कई पुत्र हुए, जिनमें सबसे छोटे राम — परशुराम — नाम से प्रसिद्ध हुए, भगवान् वासुदेव के एक आंशिक अवतार, जो पृथ्वी को उसका भार बने अत्याचारी क्षत्रिय-राजाओं से मुक्त करने के लिए नियत थे।

सा चाभूत् सुमहत्पुण्या कौशिकी लोकपावनी ।
रेणोः सुतां रेणुकां वै जमदग्निरुवाह याम् ॥ १२ ॥
तस्यां वै भार्गवऋषेः सुता वसुमदादयः ।
यवीयाञ्जज्ञ एतेषां राम इत्यभिविश्रुतः ॥ १३ ॥

sā cābhūt sumahat-puṇyā kauśikī loka-pāvanī reṇoḥ sutāṁ reṇukāṁ vai jamadagnir uvāha yām tasyām vai bhārgava-ṛṣeḥ sutā vasumad-ādayaḥ yavīyāñ jajña eteṣāṁ rāma ity abhiviśrutaḥ

अर्थ: सत्यवती अत्यन्त पवित्र, लोक-पावनी कौशिकी नदी बन गई। जमदग्नि ने रेणु की पुत्री रेणुका से विवाह किया, और उसके द्वारा भृगुवंशी ऋषि के वसुमान् आदि पुत्र हुए, जिनमें सबसे छोटे राम (परशुराम) नाम से व्यापक रूप से प्रसिद्ध हुए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 15, श्लोक 12-13)



ऋषि जमदग्नि एवं उनकी पत्नी रेणुका के आश्रम में उनके पुत्रों में सबसे छोटे एवं सर्वाधिक शक्तिशाली का जन्म होता है — राम, जो परशुराम कहलाए, भगवान् विष्णु के एक आंशिक अवतार (श्लोक 12-15)।

कार्तवीर्य अर्जुन का अभिमान

राजा परीक्षित ने पूछा कि किस अपराध ने परशुराम को बार-बार पृथ्वी को अधर्मी क्षत्रिय-राजाओं से मुक्त करने के लिए प्रेरित किया। शुकदेव ने बताया। हैहय-राज कार्तवीर्य अर्जुन ने, भगवान् दत्तात्रेय — नारायण के एक आंशिक अवतार — की आराधना करके, सहस्र भुजाएँ, अजेयता, और हर प्रकार की शक्ति पाई थी, वायु के समान लोकों में अबाध विचरण करते हुए।

श्रीबादरायणिरुवाच

हैहयानामधिपतिरर्जुनः क्षत्रियर्षभः ।

दत्तं नारायणांशांशमाराध्य परिकर्मभिः ॥ १७ ॥

बाहून् दशशतं लेभे दुर्धर्षत्वमरातिषु ।

अव्याहतेन्द्रियौजःश्रीतेजोवीर्ययशोबलम् ॥ १८ ॥

śrī-bādarāyaṇir uvāca haihayānām adhipatir arjunaḥ kṣatriyarṣabhaḥ dattaṁ nārāyaṇāṁśāṁśam ārādhya parikarmabhiḥ bāhūn daśa-śataṁ lebhe durdharṣatvam arātiṣu avyāhatendriyaujaḥ śrī- tejo-vīrya-yaśo-balam

अर्थ: शुकदेव ने कहा: हैहयों के स्वामी एवं श्रेष्ठ क्षत्रिय कार्तवीर्य अर्जुन ने, नारायण के आंशिक अवतार भगवान् दत्तात्रेय की आराधना करके, सहस्र भुजाएँ, शत्रुओं के प्रति अजेयता, और इन्द्रियों का अबाध ओज, श्री, तेज, वीर्य, यश एवं बल पाया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 15, श्लोक 17-19)

अभिमान से उन्मत्त होकर, उन्होंने एक बार नर्मदा की जलक्रीड़ा करते समय अपनी सहस्र भुजाओं से उसकी धारा को ही रोक दिया, और जब दशमुख रावण ने आपत्ति की, तब अर्जुन ने उसे पकड़कर माहिष्मती में एक पिंजरे के बन्दर के समान बन्दी बना लिया, फिर छोड़ दिया।



अभिमान एवं शक्ति से मत्त, सहस्रबाहु राजा कार्तवीर्य अर्जुन अपनी अनेक भुजाओं से महान् नर्मदा नदी को बाँध देते हैं — एक ऐसा दर्प-प्रदर्शन जिसने शक्तिशाली रावण के शिविर तक को डुबो दिया (श्लोक 20-22)।

पवित्र गौ का हरण

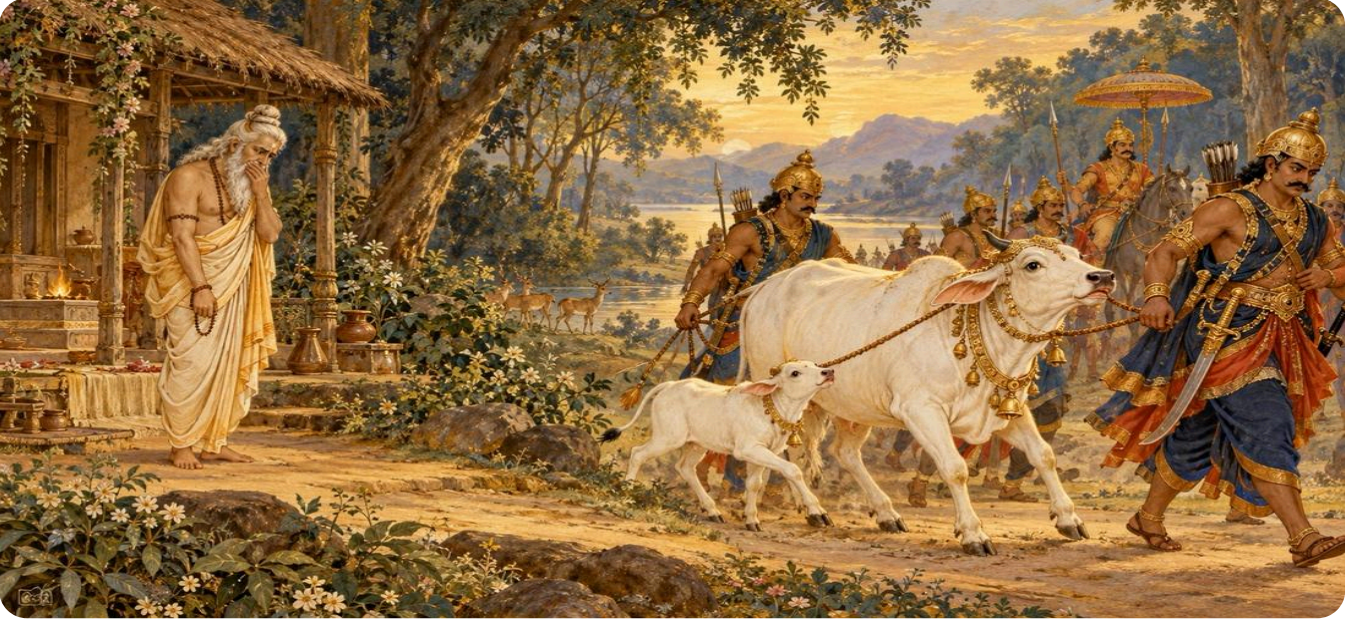
एक दिन आखेट करते हुए, अर्जुन ऋषि जमदग्नि के आश्रम पहुँचे, जिन्होंने, अपनी कामधेनु गौ की शक्ति से, राजा को उसकी सम्पूर्ण सेना सहित सत्कारपूर्वक भोजन कराया। अपने से अधिक वैभव देखकर एवं उस अद्भुत गौ की लालसा से, अर्जुन ने अभिमानवश अपने लोगों को उसे पकड़ने का आदेश दिया, और वे चीत्कार करती गौ एवं उसके बछड़े को बलपूर्वक माहिष्मती ले गए।

हविर्धानीमृषेर्दपान्नरान् हर्तुमचोदयत् ।

ते च माहिष्मतीं निन्युः सवत्सां क्रन्दतीं बलात् ॥ २६ ॥

havirdhānīm ṛṣer darpān narān hartum acodayat te ca māhiṣmatīm ninyuḥ sa-vatsām krandatīm balāt

अर्थ: अभिमानवश अर्जुन ने अपने लोगों को ऋषि की गौ, पवित्र हविष्य का पात्र, पकड़ने का आदेश दिया; और वे उसे, चीत्कार करती हुई, उसके बछड़े सहित बलपूर्वक माहिष्मती ले गए। (नवम स्कन्ध, अध्याय 15, श्लोक 26)



अपनी सम्पूर्ण सेना को भोजन कराने वाली उस अद्भुत कामधेनु की लालसा से, अभिमानी राजा कार्तवीर्य अर्जुन अपने लोगों को ऋषि जमदग्नि के आश्रम से उसे बलपूर्वक पकड़ने का आदेश देते हैं (श्लोक 23-26)।

कार्तवीर्य अर्जुन का पतन

आश्रम लौटकर एवं इस अत्याचार को सुनकर, परशुराम एक आहत सर्प के समान क्रुद्ध हो उठे। अपना भयंकर परशु, ढाल एवं धनुष लेकर, वे राजा का पीछा वैसे ही करने लगे जैसे सिंह हाथियों के झुण्ड के नायक का। अर्जुन ने अपनी सेना के सत्रह विशाल अक्षौहिणी दल उन पर भेजे, किन्तु परशुराम ने उन सबको अकेले ही नष्ट कर दिया। जब अर्जुन अपनी सहस्र भुजाओं से चट्टानें एवं वृक्ष उखाड़कर फेंकते हुए दौड़े, तब परशुराम ने अपने परशु से उन सबको ऐसे काट डाला जैसे कोई सर्प के फणों को।

पुनः स्वहस्तैरचलान् मृधेऽङ्घ्रिपा-
नुत्क्षिप्य वेगादभिधावतो युधि ।
भुजान् कुठारेण कठोरनेमिना
चिच्छेद रामः प्रसभं त्वहेरिव ॥ ३४ ॥

punaḥ sva-hastair acalān mṛdhe 'nghripān utkṣipya vegād abhidhāvato yudhi bhujān kuṭhāreṇa kaṭhora-neminā ciccheda rāmaḥ prasabhaṁ tv aher iva

अर्थ: जब अर्जुन अपने ही हाथों से उखाड़ी चट्टानें एवं वृक्ष फेंकते हुए युद्ध में दौड़े, तब परशुराम ने अपने कठोर धार वाले परशु से उनकी सारी भुजाएँ ऐसे काट डालीं जैसे कोई सर्प के फणों को। (नवम स्कन्ध, अध्याय 15, श्लोक 34)

तत्पश्चात् परशुराम ने भुजाहीन राजा का अन्त कर दिया — एक ही आघात से उसका मस्तक धड़ से इस प्रकार पृथक् हो गया मानो किसी पर्वत का शिखर गिर पड़ा हो; और पिता के इस प्रकार मारे जाने पर उसके दस सहस्र पुत्र डरकर चारों दिशाओं में भाग गए। दुखी कामधेनु एवं उसके बछड़े को पुनः प्राप्त करके, परशुराम उन्हें वापस लाए और आश्रम में अपने पिता को सौंप दिया।

कृत्तबाहोः शिरस्तस्य गिरेः शृङ्गमिवाहरत् ।
हते पितरि तत्पुत्रा अयुतं दुद्रुवुर्भयात् ॥ ३५ ॥
अग्निहोत्रीमुपावर्त्य सवत्सां परवीरहा ।
समुपेत्याश्रमं पित्रे परिक्लिष्टां समर्पयत् ॥ ३६ ॥

*kṛtta-bāhoḥ śiras tasya gireḥ śṛṅgam ivāharat hate pitari tat-putrā ayutaṁ dudruvur bhayāt
agnihotrīm upāvartya sa-vatsām para-vīra-hā samupetyāśramam pitre parikliṣṭām samarpayat*

अर्थ: परशुराम ने भुजाहीन राजा का सिर एक पर्वत-शिखर के समान काट डाला; और पिता की मृत्यु पर उसके दस हजार पुत्र भयभीत होकर भाग गए। शत्रु-वीरों के संहारक ने दुखी गौ को उसके बछड़े सहित वापस लाकर आश्रम में अपने पिता को सौंप दिया। (नवम स्कन्ध, अध्याय 15, श्लोक 35-36)



अत्याचारी को परास्त करके, भगवान् परशुराम पुनः प्राप्त कामधेनु एवं उसके बछड़े को प्रेमपूर्वक आश्रम में वापस ले जाते हैं और अपने पिता, ऋषि जमदग्नि, को सौंप देते हैं
(श्लोक 35-36)।

जमदग्नि की भर्त्सना और क्षमा की महिमा

आश्रम लौटकर, परशुराम ने अपने पिता एवं भाइयों को सम्पूर्ण घटना सुनाई। किन्तु जमदग्नि अपने पुत्र की विजय पर हर्षित नहीं हुए; उन्होंने उसे फटकारते हुए कहा कि विधिवत् अभिषिक्त राजा को, जो सभी देवताओं का अंश धारण करता है, मार डालना स्वयं में एक पाप है, चाहे कार्तवीर्य अर्जुन का अपराध कितना भी गम्भीर क्यों न रहा हो (श्लोक 37-38)।

वयं हि ब्राह्मणास्तात क्षमयार्हणतां गताः ।

यया लोकगुरुर्देवः पारमेष्ठ्यमगात् पदम् ॥ ३९ ॥

क्षमया रोचते लक्ष्मीर्ब्राह्मी सौरी यथा प्रभा ।

क्षमिणामाशु भगवांस्तुष्यते हरिरीश्वरः ॥ ४० ॥

vayaṁ hi brāhmaṇās tāta kṣamayārhaṇatāṁ gatāḥ yayā loka-gurur devaḥ pārameṣṭhyam agāt padam kṣamayā rocate lakṣmīr brāhmī saurī yathā prabhā kṣamiṇām āśu bhagavāns tuṣyate harir īśvaraḥ

अर्थ: जमदग्नि ने कहा, “हे पुत्र, हम ब्राह्मण इस संसार में केवल क्षमा के कारण पूज्य माने जाते हैं — इसी गुण से भगवान् ब्रह्मा, सम्पूर्ण लोकों के गुरु, अपने परम पद को प्राप्त हुए। जैसे सूर्य का तेज उसकी अपनी आभा है, वैसे ही क्षमा ब्राह्मण की सच्ची शोभा है; और भगवान् हरि क्षमाशील पर शीघ्र प्रसन्न होते हैं।” (नवम स्कन्ध, अध्याय 15, श्लोक 39-40)

जमदग्नि ने आगे कहा कि विधिवत् अभिषिक्त राजा का वध ब्राह्मण-वध से भी अधिक गुरतर पाप है; फिर भी यह पाप अच्युत भगवान् की भक्ति एवं पवित्र तीर्थों की सेवा से दूर हो सकता है (श्लोक 41)। इस प्रकार स्वयं परशुराम को, जो भगवान् के अपने योद्धा अवतार थे, उनके पिता ने युद्धभूमि की विजय से हटाकर क्षमा की उच्चतर महिमा की ओर बुलाया।

इस अध्याय की प्रमुख शिक्षाएँ

- छोटे चुनाव महान् नियति को आकार दे सकते हैं। सत्यवती एवं उसकी माता द्वारा मात्र दो पवित्र चरुओं का आदान-प्रदान एक सम्पूर्ण वंश के स्वभाव को बदल देता है। अध्याय दिखाता है कि पवित्र को कितनी सावधानी से सँभालना चाहिए, और छोटे कर्म कितनी दूर तक पहुँच सकते हैं (श्लोक 8-11)।
- भगवान् सज्जनों की रक्षा हेतु अवतरित होते हैं। परशुराम भगवान् विष्णु के एक आंशिक अवतार हैं, जो पृथ्वी को अत्याचारी, अधर्मी राजाओं के भार से मुक्त करने के लिए जन्मे। जब अधर्म असह्य हो जाता है, तब स्वयं भगवान् हस्तक्षेप करते हैं (श्लोक 12-15)।
- विनम्रता बिना शक्ति अत्याचार बन जाती है। कार्तवीर्य अर्जुन की सहस्र भुजाएँ एवं असीम शक्ति, विनम्रता से अनियन्त्रित, उसे एक पवित्र नदी बाँधने एवं एक ऋषि को लूटने की ओर ले जाती हैं। महान् शक्ति अभिमान से जुड़ने पर एक महान् संकट है (श्लोक 17-26)।
- पवित्र के विरुद्ध अपराध विनाश को आमन्त्रित करता है। अर्जुन का ऋषि की गौ का हरण — ब्राह्मणों एवं पवित्र के प्रति उसकी अवमानना — वह अपराध है जो उसके विनाश को निश्चित करता है। अध्याय भगवान् के सेवकों को हानि पहुँचाने की गम्भीरता को रेखांकित करता है (श्लोक 26-35)।
- धर्ममयी शक्ति सेवा करती है, और फिर पुनर्स्थापित करती है। परशुराम की भयंकर शक्ति विजय के लिए नहीं बल्कि रक्षा के लिए है: अत्याचारी को मारकर, उनका पहला कार्य भयभीत गौ को कोमलता से घर ले जाना है। सच्ची शक्ति विनाश में नहीं बल्कि पुनर्स्थापना में समाप्त होती है (श्लोक 35-36)।

6. धर्ममयी शक्ति को भी क्षमा के सम्मुख झुकना पड़ता है। अत्याचारी का वध करने के पश्चात्, परशुराम को स्वयं उनके पिता फटकारते हैं: राजा का वध, चाहे वह उचित ही क्यों न हो, एक पाप है, और ब्राह्मण की सच्ची महिमा — वही गुण जिसने भगवान् ब्रह्मा को उनका पद दिलाया — बल नहीं अपितु क्षमा है (श्लोक 37-41)।

एक भक्तिपूर्ण चिन्तन

यह अध्याय दो अत्यन्त भिन्न प्रकार की शक्तियों को साथ-साथ रखता है। कार्तवीर्य अर्जुन के पास सहस्र भुजाएँ हैं और वह एक नदी बाँध सकता है या एक राक्षसराज को बन्दी बना सकता है; फिर भी वह सारी शक्ति, विनम्रता से अशासित, अभिमान एवं चोरी में बिगड़ जाती है, और अन्ततः उसे नष्ट कर देती है। परशुराम, एक ऋषि के आश्रम में जन्मे, एक ही परशु धारण करते हैं — किन्तु वे उसे भगवान् के एक उपकरण के रूप में धारण करते हैं, महत्वाकांक्षा से नहीं बल्कि पवित्र के उल्लंघन से जागृत होकर, और एक बार उनका भयंकर कार्य पूर्ण होने पर, वे तुरन्त एक भयभीत गौ को अपने पिता के पास घर ले जाने के कोमल कार्य की ओर मुड़ जाते हैं। भागवत हिंसा का महिमामण्डन नहीं कर रहा; यह हमें दिखा रहा है कि शक्ति स्वयं में न अच्छी है न बुरी, बल्कि उसे धारण करने वाले हृदय का रूप ले लेती है। अभिमानी में, सहस्र भुजाएँ भी एक अभिशाप बन जाती हैं; भगवान् के सेवक में, एक ही परशु भी निर्दोषों की रक्षा बन जाता है। और नाटक के नीचे एक शान्त चेतावनी है — कि हम पवित्र, विनम्र एवं असहाय के साथ, जिनका प्रतीक ऋषि की कोमल गौ है, कैसा व्यवहार करते हैं, यही हमारे जीवन का सच्चा माप है। अध्याय हमें यह जाँचने का निमन्त्रण देता है कि हमारे पास कितनी शक्ति है, यह नहीं, बल्कि वह किसकी सेवा करती है।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज, अपने पास की शक्ति पर — चाहे कितनी भी छोटी हो — विचार करें और उसे भगवान् की सेवा एवं असहायों की रक्षा को समर्पित करें। जिस भी क्षेत्र में आपका प्रभाव हो — एक शब्द, एक निर्णय, आपकी पहुँच में एक दयालुता — उसे वैसे ही प्रयोग करने का संकल्प करें जैसे परशुराम ने अपना परशु किया: आत्म-प्रदर्शन के लिए नहीं बल्कि दूसरों के भले एवं पवित्र के सम्मान के लिए। कार्तवीर्य अर्जुन के अभिमान से बचें, आज किसी ऐसे को विनम्र सेवा का एक कार्य अर्पित करके जो आपको बदले में कुछ नहीं दे सकता। ऐसा करते हुए, मृदुता से दोहराएँ, “ॐ नमो भगवते वासुदेवाय,” और स्मरण करें कि वही दिव्य शक्ति जिसने पृथ्वी का भार हरा, कोमल रूप में, प्रत्येक हाथ में वास करती है जो भगवान् के लिए निर्दोषों की रक्षा करता है।

उपसंहार

यह अध्याय भृगुवंश की कथा को ऋषि ऋचीक एवं सत्यवती के विवाह से लेकर भगवान् परशुराम के जन्म एवं विजय तक ले जाता है। दो नियति को आकार देने वाले चरुओं के आदान-प्रदान से लेकर कार्तवीर्य अर्जुन के असीम अभिमान एवं उसके पतन तक, यह विनम्रता से अशासित शक्ति के संकट एवं ब्राह्मणों की पवित्रता का चित्रण करता है। कार्तवीर्य अर्जुन की सहस्र भुजाएँ एवं उसका पवित्र गौ का हरण उस पर परशुराम का क्रोध ला देते हैं, जो उस अत्याचारी का संहार करके गौ को अपने पिता को लौटा देते हैं — फिर भी यह धर्ममयी विजय अन्तिम शब्द नहीं है, क्योंकि जमदग्नि अपने पुत्र को युद्ध की महिमा से हटाकर क्षमा की उच्चतर महिमा की ओर बुलाते हैं और उसे प्रायश्चित्त करने को कहते हैं। इन सबके बीच एक स्पष्ट शिक्षा चमकती है: कि शक्ति उसे धारण करने वाले हृदय का स्वभाव धारण करती है, कि पवित्र के विरुद्ध अपराध विनाश को आमन्त्रित करते हैं, और कि भगवान्, योद्धा रूप में भी, केवल क्षमा की ओर पथ दिखाने के लिए अवतरित होते हैं।

श्रीमद्भागवत का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति को जागृत करे।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

सन्दर्भ एवं आभार

- मुख्य संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण, नवम स्कन्ध, पञ्चदश अध्याय।
- शृंखला: श्रीमद्भागवत विज्ञान • विश्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं संस्तुति के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण में दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में। यह किसी एक प्रकाशक के निरन्तर अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-9-chapter-15-parashurama-warrior-incarnation-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज्ञान • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट